शिक्षा, दर्शन और विवेकशीलता

इसराइल शेफलर से हार्वे सीगल की बातचीत

हार्वे सीगल के साथ इस साक्षात्कार में इसराइल शेफलर शिक्षा के दर्शन पर अपने अब तक के कामकाज के बारे में बात कर रहे हैं। सामान्य दर्शन से शिक्षा दर्शन में उनका प्रवेश अप्रत्याशित था। उन्होंने शिक्षा के दर्शन में काम करने के लिए सामान्य दर्शन के महत्त्व के संबंध में भी अपने विचार व्यक्त किए हैं। वे शिक्षा में विवेकशीलता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता पर जोर देने के साथ ही शिक्षा दर्शन में विवेकशील चिंतन की अनिवार्यता पर जोर देते हुए कहते हैं कि विवेकशील चिंतन दुनिया को खास रूप में नहीं गढ़ता बल्कि यह आलोचनात्मक चिंतन का विचार है। न ही विवेकशीलता का विचार सुखद राजनीतिक परिणामों का आश्वासन देता है बल्कि यह तो समझ को बल प्रदान करता है, कार्य को प्रभावी बनाता है और सत्य का अनुसरण करता है। वे शिक्षा के दर्शन में जॉन डीवी की विरासत की चर्चा करने के साथ ही शिक्षा के दर्शन में आ रहे बदलावों और इस विषय की वर्तमान स्थिति की भी बात करते हैं।

लेखक परिचय :

बीसवीं शताब्दी के ख्यातनाम अमेरीकी शिक्षा दार्शनिक, हार्वर्ड यूनिवर्सिटी में दर्शन एवं शिक्षा के प्रोफेसर, फोर्ड फाउन्डेशन के फेलो रहे, वर्तमान में हार्वर्ड कॉलेज के अध्यक्ष और फेलो।

पुस्तकें : फिलॉसोफी एण्ड एज्युकेशन, द एनाटॉमी ऑफ इनक्वारी, साइंस एण्ड सब्जेक्टीविटी, कन्डीशंस ऑफ नॉलेज, रीजन एण्ड टीचिंग।

अनुवाद :

देवयानी

हार्वे सीगल : आपकी नई किताब 'गैलेरी ऑफ स्कॉलर' में आपने शिक्षा के दर्शन में आपके अप्रत्याशित प्रवेश के बारे में बताया है। क्या आप संक्षेप में उसके बारे में फिर से बताएंगे?

इसराइल शेफलर : शिक्षा के दर्शन में मेरा प्रवेश अप्रत्याशित और अनियोजित था। रॉकफेलर फाउंडेशन ने हार्वर्ड के ग्रजुएट स्कूल ऑफ एज्युकेशन में उदार कलाओं, इतिहास और दर्शन के क्षेत्र में एक-एक, इस तरह दो शिक्षक नियुक्त करने के लिए अनुदान दिया। जब यह अनुदान घोषित हुआ और फोन पर मुझे इसकी सूचना मिली उस वक्त संयोग से पेनसिल्वेनिया यूनिवर्सिटी में मेरे शिक्षक रहे प्रोफेसर नेल्सन गुडमेन कैम्ब्रिज में थे। मैं उस वक्त फिलाडैल्फिया में रह रहा था और नौकरी के बारे में कुछ सोचा तक नहीं था। गुडमेन ने मुझसे अनुरोध किया कि मैं कैम्ब्रिज में आकर स्कूल ऑफ एज्युकेशन के डीन फ्रांसिस कैपल से मिलूं, जिन्हें वे पहले ही मेरे बारे में बता चुके थे। हुआ यह कि कैपल को स्वयं एक ऐसे शिक्षक की आवश्यकता थी जिसकी शिक्षा से जोड़ते हुए दर्शन के प्रति खास दृष्टि हो। कैपल के साथ अपनी बातचीत में मैंने उन्हें बताया कि 'मैंने शिक्षा का औपचारिक रूप से अध्ययन नहीं किया है', इस पर उन्होंने कहा कि 'यदि तुमने औपचारिक अध्ययन किया हुआ होता तो हम तुम्हें नियुक्त करने पर विचार भी नहीं कर पाते क्योंकि हमें इस काम के लिए खासतौर से ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता है जो शिक्षा के क्षेत्र से बाहर का हो।' मैं बाहर का व्यक्ति था। इतिहास में इस पद पर बर्नार्ड बेलिन को रखा गया, वे भी इतनी ही योग्यता रखते थे। और इस तरह मुझे यह नौकरी मिल गई और कैपल जो स्वयं एक बहुत असाधारण डीन थे उन्होंने भी मुझे

इस बारे में कुछ भी बताने से इनकार कर दिया कि मुझे क्या पढ़ाना है और कैसे पढ़ाना है; मैं जो भी चाहता वह करने के लिए स्वतंत्र था। लेकिन उनका विचार था कि मुझे पहले सेमेस्टर में पढ़ाने की कोई जरूरत नहीं है बल्कि मुझे फेकल्टी के विभिन्न सदस्यों से बातचीत कर यह पता लगाना चाहिए कि वे स्कूल ऑफ एज्युकेशन में दर्शन की भूमिका को किस तरह देखते हैं। उसके बाद मैं तय करूं कि मुझे क्या करना है। तो मैंने फेकल्टी के विभिन्न सदस्यों से बात की, जिन्होंने मुझे दर्शन के बारे कई बातें बताईं। लेकिन उनकी बातों में इतनी विविधता थी कि वे अंततः किसी एक जगह पर ले नहीं जाती थीं। तब मैंने तय किया कि मैं वही करूं जो मुझे लगता है और जिसे कि मैं बेहतर ढंग से कर सकता हूं। मैं विश्लेषणात्मक नैतिकता के बारे में और ज्यादा जानना चाहता था, और मैंने तय किया कि इसके बारे में और ज्यादा जानने का बेहतर तरीका है कि इसे पढ़ाया जाए। इसलिए मैंने इस विषय को पढ़ाना शुरू किया। इसके बाद मैंने विज्ञान और भाषा के साथ ही साथ अमेरिकी दर्शन और खासतौर से व्यवहारवादियों के साथ काम करना शुरू किया जिनके प्रति मेरी विशेष रुचि थी। शिक्षा के साथ मेरा वास्तविक परिचय स्कूल ऑफ एज्युकेशन में विद्यार्थियों के साथ काम करने से ही हुआ। मैं उन्हें जो कुछ भी बताता उसे वे जिस रूप में ग्रहण करते वही शिक्षा थी। अपने उन श्रोताओं को जो भी दर्शन में पढ़ा रहा था उसे संप्रेषित करना ही शिक्षा में मेरी शिक्षा थी।

सीगल : पलट कर देखने पर क्या आपको लगता है कि कैपल का विचार काफी अच्छा था? क्या आप इस बात की सिफारिश करेंगे कि शिक्षा के दार्शनिक आपकी ही तरह सामान्य दर्शन में प्रशिक्षित होने चाहिएं?

शेफलर : मैं पूर्णतः सामान्य दर्शन में प्रशिक्षण का पक्षधर हूं। किसी भी विषय के किसी खास उपयोग को छांटकर अलग कर देने या फिर अन्य स्कूलों की तरह विद्यार्थियों को अपना प्रिय विषय चुनने के लिए चयन का कोई आधार बताए बिना शिक्षा के दर्शन को किसी रूढ़ पाठ्यक्रम में बांध देने से वह विषय अपने आप में कितना समृद्ध है, यह नहीं समझा जा सकता। जब मैंने अध्यापक के रूप में काम करना शुरू किया तब ज्यादातर पाठ्यपुस्तकें इस विषय को यथार्थवाद, निरंतरतावाद (चमतमददपंसपेजे) थोमसवाद और उपयोगितावाद (चतंहउंजपेज) जैसी श्रेणियों में बांट कर देखने की कोशिश कर रही थीं; प्रत्येक श्रेणी के साथ शिक्षा में उसके संभावित उपयोग को लेकर छोटे-छोटे रेखा चित्रनुमा संलग्न थे। कुछ तो हास्यास्पद थेः जैसे कि उपयोगितावादी चल कुर्सी का पक्ष लेते हैं तो थोमसवादी अचल कुर्सियों पर जोर देते हैं। मैंने विद्यार्थियों के साथ शैक्षिक प्रक्रिया में शामिल होते हुए दार्शनिक समस्याओं पर काम करना सिखाने की कोशिश की। इस विधि का सुखद असर यह हुआ कि विद्यार्थियों को यह विषय बेहद पसंद आने लगा।

कलाएं वे क्षेत्र हैं जिनमें विवेकशीलता और विवेकशीलता से जुड़े विचारों के समूहों के लिए जगह होती है - जैसे बहस, विचार करना, पुनर्विचार करना और उन विचारों को प्रकट करना। नृत्य का कोई विद्यार्थी सिर्फ भाव प्रकट करने और हाथ-पैरों को खास लय में हिलाने का काम ही नहीं कर रहा होता है बल्कि सीखने वाला और सिखाने वाला दोनों ही काफी चिंतन, सवाल-जवाब और चर्चा भी कर रहे होते हैं, भले ही वे शब्दों का प्रयोग न कर रहे हों तब भी अपने चेहरे के भावों और देह की भंगिमाओं के माध्यम का भी उपयोग कर रहे होते हैं।

सीगल : अध्यापन के विषय के रूप में शिक्षा का दर्शन और सामान्य दर्शन के बीच अंतःसंबंध को आप कैसे देखते हैं?

शेफलर : मेरे खयाल से इस संबंध को अन्य विषयों के दर्शन के साथ तुलना कर देखा जा सकता है जैसे इतिहास का दर्शन, विज्ञान का दर्शन, भाषा का दर्शन आदि। हर मामले में दार्शनिक विचार एक कर्म क्षेत्र है जिसे स्वतंत्र रूप से समझा जाता है और संजीदगी के साथ लिया जाता है। हालांकि मुझे लगता है कि इन अन्य विषयों के विपरीत शिक्षा के दर्शन की एक खास समस्या है। शिक्षा एक इतना व्यापक और विविधतापूर्ण क्षेत्र है कि यह अपने दार्शनिक को बहुत अलग-अलग दिशाओं में भटकाता है। उदाहरण के लिए विज्ञान के दर्शन या भाषा के दर्शन के विपरीत इस क्षेत्र की महत्वपूर्ण समस्या यह है कि इसमें पहले हुए काम के आधार पर निरंतर शोध की नई दिशा विकसित करते हुए विसंगतियों से बचना होता है। अब विज्ञान की तुलना में दर्शन में यह समस्या होना आम बात है और कुछ हद तक यह किसी भी दार्शनिक प्रक्रिया में होना अपेक्षित भी होता है। लेकिन शिक्षा में मुझे लगता है कि यह समस्या ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाती है।

सीगल : क्या आप इस दिशा में किसी खास तरह का विकास देखना चाहते हैं?

शेफलर : नहीं, मेरे खयाल से सामान्यतः कोई भी दिशा, जब तक कि उसमें निरंतरता बनी रहे।

सीगल : आप शिक्षा में विवेकशीलता के महत्व पर काफी जोर देते रहे हैं। शायद वह एक दिशा हो सकती है। क्या शिक्षा में विवेक के महत्त्व को लेकर आपकी राय इन वर्षों में बदली है ? उदाहरण के लिए क्या आप यह कहेंगे कि इसे पोषित करना शिक्षा का मौलिक उद्देश्य है ? यदि हां तो क्यों ?

शेफलर : मैं शायद इसे शिक्षा का उद्देश्य नहीं कहूंगा, यदि उसका कोई एक उद्देश्य होता हो तो। इसकी बजाय में कई सारे उद्देश्यों को सामने रखने की बात कहूंगा, लेकिन निश्चय ही मैं विवेकशीलता को मुख्य उद्देश्य मानने का पक्ष लूंगा, खासतौर से इसलिए क्योंकि किसी भी पहलू के बारे में समझदारी के साथ पूछे जाने वाले कारण या कारणों पर यह लागू होता है फिर चाहे वह व्यावहारिक, नैतिक, सौंदर्यात्मक या दक्षता पर अधिकार से संबंधित ही क्यों न हों। विवेकशीलता की व्यापकता की चर्चा करें तो हम पाएंगे कि यह शिक्षा में विविध क्षेत्रों को एक-दूसरे से अलग करने की बजाय उनके बीच सेतु की तरह काम करती है। उदाहरण के लिए कलाएं, वे क्षेत्र हैं जिनमें विवेकशीलता और विवेकशीलता से जुड़े विचारों के समूहों के लिए जगह होती है - जैसे बहस, विचार करना, पुनर्विचार करना और उन विचारों को प्रकट करना। नृत्य का कोई विद्यार्थी सिर्फ भाव प्रकट करने और हाथ-पैरों को खास लय में हिलाने का काम ही नहीं कर रहा होता है बल्कि सीखने वाला और सिखाने वाला दोनों ही काफी चिंतन, सवाल-जवाब और चर्चा भी कर रहे होते हैं, भले ही वे शब्दों का प्रयोग न कर रहे हों तब भी अपने चेहरे के भावों और देह की भंगिमाओं के माध्यम का भी उपयोग कर रहे होते हैं।

यह मानना कि विवेकशीलता महिलाओं को कम रास आती है या वे किसी चीज के प्रति विवेकशीलता के साथ अपनी राय प्रकट करने में कम समर्थ हैं, अपने आप में उन्हें अपमानित करता है।....

विवेकशीलता अपने आप में आलोचनात्मक चिंतन का विचार है। वह दुनिया को किसी खास रूप में गढ़ने की कोशिश नहीं करता, न ही यह पुरुषों के प्रति किन्हीं खास मूल्यों या सामाजिक मंच को स्थापित करती है। इसलिए विवेकशीलता की आलोचना में यह महिलावादी तर्क नितांत अप्रासंगिक है और किसी भी रूप में विवेकशीलता के उच्च मूल्यों के सामने कोई चुनौति प्रस्तुत करता है।

सीगल : शिक्षा, दर्शन या सामान्यतः अन्य क्षेत्रों में इधर विवेकशीलता की जो आलोचना हो रही है उसे आप कैसे लेते हैं ?

शेफलर : मुझे इस बारे में लोकप्रिय किस्म की प्रतिक्रियाओं के बारे में जितनी जानकारी है उतनी इसे लेकर दार्शनिक बहस के बारे में जानकारी नहीं है। समकालीन लोक मानस विवेकशीलता की कीमत पर भावनाओं को बढ़ावा दे रहा है। मेरा मानना है कि इस मानस का स्रोत कहीं 'आध्यात्मिकता' जैसी किसी चीज की भूख है, जिसकी ज्यादा व्याख्या नहीं की गई है। मैं इस भूख के प्रति इस मायने में सहानुभूति रखता हूं क्योंकि मैं इसे वर्तमान समाज में प्रचलित और लोकप्रिय मीडिया द्वारा बहुप्रचारित उपभोक्तावाद, निरर्थकताबोध और अश्लीलता के प्रति असंतोष के एक लक्षण के रूप में देखता हूं। यह असंतोष किसी ज्यादा शालीन और बेहतर की तलाश की चाह को बल प्रदान करता है। मैं इस चाह को समझता हूं लेकिन न तो विवेकशीलता पर लगाए जाने वाले आरोपों के प्रति सहानुभूति रखता हूं और न ही बिना सोची-समझी आध्यात्मिकता की सराहना करता हूं।

सीगल : इससे ऐसा लगता है कि आप इनमें से किसी को भी विवेकशीलता को लेकर गंभीर आलोचना के रूप में नहीं देखते ?

शेफलर : मैं नहीं देखता।

सीगल : शायद मैं विवेकशीलता की एक ज्यादा प्रत्यक्ष आलोचना की तरफ आपका ध्यान आकर्षित कर पाऊं। कुछ विचारक ऐसे हैं जो पश्चिम की दर्शन परंपरा में विवेकशीलता के विचार को जिस तरह ग्रहण किया गया, उस मूल विचार की ही इस आधार पर आलोचना करते हैं कि इसके दुखद राजनीतिक परिणाम और धारणाएं हैं, खासतौर से उनका मानना है कि यह विवेकशीलता के उस खास पश्चिमी वर्चस्व की अवधारणा को उन लोगों पर आरोपित करती है जिनके विविध सांस्कृतिक मूल्य, संस्कृतियां और लैंगिक पहचान आदि हैं। क्या इसके प्रति आपकी कोई राय है?

शेफलर : हां, यदि इसका कड़ा जवाब दिया जाए तो मुझे इस तरह के तर्क हास्यास्पद लगते हैं।

सीगल : 'हास्यास्पद' - वह वाकई कड़ा जवाब है! लेकिन क्यों ?

शेफलर : पहली बात तो यह कि विवेकशीलता का पक्ष इस आधार पर नहीं लिया जाता है कि वह किन्हीं सुखद राजनीतिक परिणामों का आश्वासन देती है, बल्कि यह समझ को बल प्रदान

करती है, कार्य को प्रभावी बनाती है और सत्य का अनुसरण करती है। राजनीतिक, सांस्कृतिक और लैंगिक आलोचना इस मामले में अप्रासंगिक हैं। दूसरे, यह कहना हास्यास्पद है कि विवेकशीलता का विचार पश्चिम की देन है और पूर्व की इच्छा के विरुद्ध उस पर आरोपित किया गया है। आध्यात्मिक एशिया की रूढ़ीवादी बातों का खंड़न विज्ञान, गणित और तकनीकि ज्ञान में एशिया की उत्कृष्टता और राजनीतिक सत्ता और व्यापार के विस्तार में एशियाई देशों की जबरदस्त भागीदारी से स्वतः हो जाता है। मुझे याद है एक बार जब मैं एशिया जाने वाला था तब मैंने अपने दांतों के डॉक्टर से पूछा था कि यदि वहां रहते हुए मुझे दांतों में तकलीफ हो तो मुझे क्या करना होगा ? तब मेरे सवाल पर हंसते हुए उन्होंने मुझे बताया था कि दांतों के उपचार के क्षेत्र में दुनिया की सबसे बेहतरीन तकनीक जापान में उपलब्ध है।

सीगल : क्या आप समाज मनोविज्ञानी रिचर्ड निस्बेट की की किताब 'द ज्यॉगराफी ऑफ थॉट : हाउ एशियंस एंड वेस्टर्नस थिंक डिफरेंटली एंड व्हाय' के बारे में जानते हैं, जिसमें पश्चिम और पूर्व की मानसिकता में फर्क के बारे में चर्चा की गई है ?

शेफलर : मैं इस किताब के बारे में नहीं जानता। लेकिन निश्चय ही मानसिकता में फर्क होता है और जिसका मूल इतिहास और संस्कृति में निहित होता है। उदाहरण के लिए, अपनी जापान यात्रा के दौरान मुझे जिस चीज ने अत्यधिक प्रभावित किया वह वहां का धार्मिक पहलू था, और उसमें भी ज्यादा झुकाव एकेश्वरवाद के प्रति नहीं बल्कि बहुईश्वरवाद के प्रति महसूस किया। क्याटो में संजुसंगेंदु मंदिर का मुख्य हॉल, जिसमें कन्नन बोसात्सु की 1001 मूर्तियां स्थापित हैं, प्रत्येक मूर्ति साढ़े पांच फीट ऊंची और हरेक के नाक-नक्श एक-दूसरे से नितांत अलग, मेरे लिए उस हॉल में जाना एक नितांत भिन्न किस्म का अनुभव था। यह मान्यता की दुनिया एक नहीं अनेक है, धर्म की दृष्टि से, यह संभवतः मानसिकता का ही अंतर है जो एशियाई संस्कृति में अंतर्निहित है। लेकिन यह मान लेना कि विवेकशीलता चाहे तकनीकि विवेकशीलता, औपकरणिक विवेकशीलता या तार्किक या भाषिक विवेकशीलता किसी के भी साथ इसका कोई मतभेद है, मुझे ऐसा नहीं लगता।

सीगल : क्या आपको लगता है कि विवेकशीलता या तर्क के इतने बखान के पीछे कहीं लैंगिक आग्रहों की भी कोई भूमिका है? कुछ फेमिनिस्टों ने आपके विचारों के बारे में कहा है कि वे मर्दवादी और महिला विरोधी हैं। आप इस आरोप का क्या जवाब देंगे ?

शेफलर : यह दावा भी हास्यास्पद और अपने आप में महिला विरोधी आग्रहों को प्रकट करने वाला है। यह मानना कि विवेकशीलता महिलाओं को कम रास आती है या वे किसी चीज के प्रति विवेकशीलता के साथ अपनी राय प्रकट करने में कम समर्थ हैं, अपने आप में उन्हें अपमानित करता है। मुझे कई साल पहले अमरीकी दर्शन संघ द्वारा फेमिनिज्म के मुद्दे पर आयोजित की गई एक बैठक अब तक याद आती है। पेनल में बैठे कुछ वक्ता फेमिनिज्म को लेकर अपनी राय प्रकट कर रहे थे, तब श्रोताओं के बीच से येल तर्कशास्त्री रुथ बार्कान मार्कस ने एक टिप्पणी की थी। उन्होंने उस वक्त की याद दिलाई थी जब उन्होंने अपनी स्नातक स्तर की पढ़ाई पूरी की थी, तब उन्होंने महिलाओं की विशेष मानसिकता संबंधी फ्रायड की स्थापना के प्रति अपना विरोध दर्ज कराने के लिए महिला स्नातक विद्यार्थियों के साथ मिलकर फ्रायड का पोस्टर दीवार पर लगा कर उस पर निशाने साधे थे। उन्होंने याद दिलाया कि उसके बाद जब अपने शिक्षक को बताया कि वे गणित में विशेषज्ञता हासिल करना चाहती हैं तब उन अध्यापक ने कहा था कि तुम गणित में विशेषज्ञता हासिल नहीं कर सकतीं, क्योंकि तुम एक औरत हो। इस वक्तव्य का समापन उन्होंने लगभग इन शब्दों के साथ किया था कि, ''मैं अपना जीवन इन्हीं आग्रहों के खिलाफ संघर्ष करते हुए बिताती आई हूं। अब इस बैठक में मुझे खुद महिलाओं द्वारा यह बताया जा रहा है कि विवेकशीलता की दृष्टि से महिलाएं अलग होती हैं और तकनीकी बातों को संभाल नहीं सकतीं?'' वह एक बहुत ही प्रभावशाली वक्तव्य था जो सीधे निशाने पर अपनी बात कहता था।

अपने अकादमिक और जीवन के अनुभवों के दौरान मेरा ऐसी अनेक महिलाओं से परिचय हुआ है जो मेरे परिचय के किसी भी पुरुष की तुलना में समान रूप से रचनात्मक, विवेकशील और बौद्धिक रूप से गंभीर हैं। निश्चय ही सामाजिक दबावों के चलते महिलाओं को अपनी पेशेवर क्षमताओं के भरपूर उपयोग के अवसरों से वंचित रखा गया है और इसका दारोमदार उनके विवेक के मत्थे मढ़ दिया गया है। यह वही दबाव हैं तो महिलाओं के प्रति आग्रहों को बढ़ावा देते हैं, विवेकशीलता के उच्च प्रतिमान नहीं हैं।

सीगल : मुझे इसमें संदेह है कि वही मूल आपत्ति होगी। हालांकि उनकी ओर से बोलते हुए मुझे झिझक होती है फिर भी (और बहुत सी बातों के साथ ही) कई महिलावादी यह कह सकती हैं कि 'हम इस बात से असहमत नहीं है कि रुथ बार्कान मार्कस एक महान तर्कशास्त्री हैं। हमारा सवाल यह नहीं है। हमारा सवाल यह है कि पश्चिम में विवेकशीलता को जिस तरह ग्रहण किया गया है, वह दुनिया को एक ऐसे सांचे में ढाल कर देखती है जिसमें कुछ मूल्य प्रतिपादित होते हैं और कुछ मूल्य नकार दिए जाते हैं - और यह जिस तरह से किया जाता है उसमें उन क्षमताओं और गुणों को

ज्यादा बढ़ावा दिया गया है जो पुरुषों से संबद्ध हैं और जिसे 'सार्वजनिक मंच' कहते हैं उसमें यह घटित होते हैं, सार्वजनिक जीवन के इस मंच पर जहां विवेकशील तर्क-वितर्क और हिसाब-किताब को सर्वोच्च महत्व हासिल है, वहां निजी जीवन के मंच के महत्व को कम करके देखा जाता है, जैसे बच्चों की परवरिश, देखभाल करना, घर की देखभाल और अन्य गतिविधियां जहां हिसाब-किताब की बजाय कुछ दूसरी बातें ज्यादा महत्वपूर्ण होती हैं। और इसलिए विवेक का पश्चिम में जिस तरह का चरित्र-चित्रण किया गया है उसकी इस तरह की अलोचनाएं यह हर्गिज नहीं कहना चाहती कि रुथ बार्कान मार्कस महान तर्कशास्त्री नहीं हैं - निश्चय ही नहीं। इनका आशय तो यह है कि जीवन के अन्य पहलू जिनकी जिम्मेदारी परंपरागत रूप से महिलाओं पर है उन्हें कम महत्त्व मिल पाता है और ऐसा होने में समस्या है।

शेफलर : आप जिसे कुछ फेमिनिस्टों की 'मूल आपत्ति' कह रहे हैं, जो यह कहते हैं कि 'विवेकशीलता को जिस तरह ग्रहण किया गया है वह दुनिया को जैसे गढ़ती है' ताकि पुरुषों की क्षमताओं गुणों को अतिरिक्त महत्व प्राप्त हो सके। आप यह बताएं कि दरअसल यह तर्क ठीक-ठीक किसके प्रति आपत्ति दर्ज कराता है? निश्चय ही विवेकशीलता के प्रति नहीं बल्कि इसे किस रूप में ग्रहण किया गया है उसके बारे में व्याप्त धारणाओं के प्रति। विवेकशीलता अपने आप में आलोचनात्मक चिंतन का विचार है। वह दुनिया को किसी खास रूप में गढ़ने की कोशिश नहीं करता, न ही यह पुरुषों के प्रति किन्हीं खास मूल्यों या सामाजिक मंच को स्थापित करती है। इसलिए विवेकशीलता की आलोचना में यह महिलावादी तर्क नितांत अप्रासंगिक है और किसी भी रूप में विवेकशीलता के उच्च मूल्यों के सामने कोई चुनौति प्रस्तुत करता है। फेमिनिस्टों की लड़ाई प्रचलित सामाजिक पाबंदियों के खिलाफ है और उसके खिलाफ अपनी बहस के लिए वे पैंतरे बदलते रहते हैं।

सीगल : तो यदि मैं चर्चा के इस भाग का निचोड़ निकालने की कोशिश करूं: यदि मैं आपकी बात को ठीक तरह से समझ पाया हूं तो आपका कहना कुछ इस तरह है कि 'यदि महिलाएं किन्हीं खास निजी क्षेत्रों तक सीमित कर दी गई हैं, जहां तर्क बहुत प्रासंगिक नहीं रह जाता है तो इसका समाधान सबसे पहले तो यह समझने में है कि तर्क प्रासंगिक है; और दूसरे यह कोई दार्शनिक समस्या नहीं है बल्कि एक सामाजिक समस्या है जिसे सामाजिक बदलाव के द्वारा हल किया जा सकता है।' क्या आपकी बातों को इस तरह से समझा जाना चाहिए?

शेफलर : हां।

सीगल : धन्यवाद। अब हम कुछ अन्य मुद्दों की ओर चलते हैं। क्योंकि आप स्वयं शिक्षा के दर्शन से जुड़े रहे हैं, आप यह जानते हैं कि इसके (शिक्षा के दर्शन) इतिहास में विश्लेषण की परंपरा का बहुत विकास हुआ और फिर कुछ हद तक उसमें ठहराव भी आ गया। मैं उम्मीद करता हूं कि आप शिक्षा के दर्शन में विश्लेषण और विश्लेषणपरक दर्शन के स्थान के बारे में और आपके करियर के दौरान इसमें आए उतार-चढ़ाव के बारे में कुछ बताएंगे।

शेफलर : दर्शन के अपने उतार-चढ़ाव और बदलाव होते हैं। मुझे एक बहस की याद आती है जिसमें उपयोगितावाद के समर्थक सिडनी हुक की बात का जवाब देते हुए थर्मन आर्नोल्ड ने दर्शन की तुलना बैले नृत्य से करते हुए कहा था कि यह वैसे ही है जैसे पहले नर्तकों का एक समूह मंच के बीच में आता है, नृत्य करता है और अपनी जगह पर लौट जाता है, उसके बाद दूसरा समूह मंच के बीच में आता है अपना नृत्य प्रस्तुत करता है और लौट जाता है। उनकी बात का निष्कर्ष कुछ इस तरह था कि उपयोगितावादियों का हिस्सा जब संपन्न हो जाएगा तब वे भी मंच के किनारे पर चले जाएंगे ताकि उनके बाद वाले आकर अपने हिस्से की प्रस्तुति दे सकें। इस तरह उपयोगितावादियों की अपनी अहम भूमिका है। बीस, तीस और चालीस के दशक में डीवी उत्कर्ष पर थे और फिर ऐसा ठहराव आया कि डीवी में किसी की कोई रुचि नहीं रही और इस तरह उनका युग समाप्त हो गया। फिर अन्य किस्म के विचार उभरे, जो विश्लेषण की नई तकनीकों की बात करते थे, जिनका मैं समर्थन करता हूं। मैं जानता था कि दर्शन निरंतर विकसित होते रहने की बजाय रुक-रुक कर आगे बढ़ता है, इसलिए डीवी को लेकर आए ठहराव को मैंने गंभीरता से नहीं लिया, और वास्तव में मैंने जब हावर्ड में पढ़ाना शुरू किया तो वे ऐसे पहले दार्शनिक थे जिनके बारे में मैंने छात्रों को पढ़ाया। बाद में जब मैं अन्य क्षेत्रों में अपने अध्ययन पर ध्यान केंद्रित कर रहा था, उपयोगितावाद पर मैंने अपनी पुस्तक पूरी कर ली थी, तब तक डीवी फिर से चर्चा के केंद्र में आ गए थे और अब तो वे अब तक की सबसे व्यापक धारा के रूप में स्थापित हो चुके हैं। इधर के वर्षों में शिक्षा के विश्लेषणपरक दर्शन में रुचि क्षीण होती जा रही है और विश्लेषण के समकालीन प्रयास कई बार मुझे सही दिशा में जाते हुए नजर आते हैं, लेकिन उनकी विकास की निरंतरता में गतिरोध आता रहता है। लेकिन किसी भी दृष्टि से विकास की निरंतरता कोई विकल्प नहीं है। इमरे लाकातोस ने इस बात को समझने की आवश्यकता पर जोर दिया है कि शोध के कार्यक्रमों का उत्साह कुछ समय के बाद ठंडा पड़ने लगता है, और निश्चय ही ऐसा विज्ञान और दर्शन के साथ भी होता है। लेकिन वे कभी भी हमेशा के लिए ठहरते नहीं हैं, वे अक्सर शीत

निद्रा में जाते हैं ताकि पहले से अलग लेकिन उससे मिलते-जुलते रूप में लौट कर आ सकें। आप किसी भी सूरत में विश्लेषण से मुक्ति नहीं पा सकते जो अरस्तू से लेकर अब तक हमेशा दर्शन के इतिहास का प्राथमिक गुण रहा है। मुझे पता नहीं इसमें आपके सवाल का जवाब है कि नहीं।

सीगल : अवश्य है। मैं डीवी के बारे में आपकी टिप्पणी से बात आगे बढ़ाता हूं। पिछले लगभग 50 या उससे अधिक वर्षों से आप डीवी को पढ़ा रहे हैं, आपकी नजर में शिक्षा के दर्शन में डीवी की क्या प्रासंगिकता है? और आपको क्या लगता है कि डीवी को अमरीका की तुलना में इग्लैंड में कम पसंद किए जाने के पीछे क्या कारण हैं?

शेफलर : आपके दूसरे सवाल के जवाब में मैं सिर्फ अनुमान लगा सकता हूं। एटलांटिक के दोनों तटों पर डीवी को जिस तरह से ग्रहण किया गया उसके पीछे निश्चय ही दोनों तरफ के कुछ सांस्कृतिक, शैक्षिक और ऐतिहासिक कारण जिम्मेदार रहे होंगे। मैं आपके इस सवाल के विस्तार से जवाब देने की जिम्मेदारी इतिहासकारों पर छोड़ते हुए आपके पहले प्रश्न की ओर लौटना चाहूंगा। फिर भी मैं लिखने के तरीके में अंतर पर एक संक्षिप्त टिप्पणी करना चाहूंगा। डीवी, जिन्होंने हीगेलवादी के रूप में लिखना शुरू किया था कि लेखन शैली पर्याप्त अजीब थी, खासतौर से अपने पूर्ववर्ती और विरोधी बर्टेंड रसेल की तुलना में जिनकी मेधावी संक्षिप्तता ने ब्रिटेन की दर्शन परंपरा और गणित ने धार प्रदान की। मेरा यह मानना है कि शैली की इस भिन्नता का भी असर होता है, लेकिन जैसा कि इस कहानी से पता चलता है कि वह असर अपूरणीय नहीं होता। अल्फ्रेड नॉर्थ ह्वाइटहेड संशय के पक्षधर थे, वे अंग्रेज भी थे और प्रसिद्ध गणितज्ञ भी। हार्वर्ड में, जहां वे 1929 से अध्यापन कर रहे थे शोध की मौखिक परीक्षा के दौरान उन्होंने एक परीक्षार्थी (मान लें की परीक्षार्थी की नाम मिस्टर जोंस है) से पूछा, 'हां तो मिस्टर जोंस आप स्पष्टता के बारे में क्या राय रखते हैं?' अब मिस्टर जोंस ने स्पष्टता की प्रशंसा में बोलना शुरू किया और वे बोलते चले गए। ह्वाइटहेड ने उनकी बात खत्म होने के धैर्य के साथ इंतजार किया और तब उन्होंने कहा 'इतना काफी है मिस्टर जोंस।'

सीगल : और डीवी के शिक्षा के दर्शन की प्रासंगिकता ?

शेफलर : डीवी शिक्षा को मोटे तौर पर समाज की एक ऐसी गतिविधि के रूप में देखते थे, जिसके तमाम तरह के सामाजिक प्रभाव युवाओं पर अपना असर डालते हों। प्लेटो के इस प्रभाव को डीवी ने काफी गंभीरता के साथ लिया; यह शिक्षा को स्कूलों के सीमित साम्राज्य के दायरे से बाहर निकालने का प्रयास करती है और व्यापक संदर्भ में रखती है, जो स्कूल को व्यापक सामाजिक व्यवस्था के बीच अपनी तरह की एक सामाजिक व्यवस्था के रूप में देखती है। समाज में गुणवत्तापूर्ण सह जीवन में लोकतंत्र के महत्त्व पर डीवी ने जिस तरह जोर दिया, वह प्रासंगिकता का महत्त्वपूर्ण बिंदु है, जिसमें एक से दूसरे के साथ संपर्क स्थापित करने और आगे बढ़ने में मुक्त और खुला संवाद मदद करता है। इस तरह वे एक लोकतांत्रिक समाज के सदस्यों के बीच उभरने वाले उन गतिरोधों को कम से कम रखने के प्रति चिंतित थे, जो पेशों, रुचियों, भौगोलिक स्थितियों और अन्य अनेक अवश्यंभावी विविधताओं के परिणामस्वरूप इन गतिरोधों के पार मुक्त आवाजाही को प्रभावित कर सकते हैं। डीवी ने अन्यों को समझने की कोशिश के लिए समुदाय को संवाद से जोड़ा। उनके अनुसार न सिर्फ तीन 'आर' बल्कि साहित्य और कला को समझने की इस तरह की कोशिश का विस्तार शिक्षा का प्राथमिक कार्य है, जो अन्यों की विशेष परिस्थितियों को समझने में सरलता प्रदान करते हुए लोकतंत्र को विस्तार प्रदान करती है।

डीवी ने सिद्धांत और व्यवहार के बीच अंतःसंबंध पर जोर दिया। उनके लिए कार्य सिद्धांत से न तो असंबद्ध है और न ही सीखने की राह में बाधा। बल्कि वास्तव में यह हमारे कार्यों और उनके परिणामों के बीच संबंध को समझने के लिए आवश्यक है। कक्षा और बाहर के वातावरण में भी विचार के साथ सार्थक संबंध को स्थापित करने के लिए कार्य या उदाहरण के द्वारा उसका प्रतिपादन करना, डीवी के शिक्षा के विचार का मूल सिद्धांत है। उनका आदर्श समाज प्रत्येक व्यक्ति को अधिकतम विकास प्रदान करता है, जो विचारों के समझदारीपूर्ण आदान-प्रदान को पोषित करते हुए उन्हें अनुभव के द्वारा जांचने का खुलापन हो - उन विचारों से प्रभावित होने वाले सभी व्यक्तियों के द्वारा आलोचना के लिए खुला और सर्वसम्मति से प्रक्रियाओं में बदलाव के लिए तैयार। डीवी यह कहते हैं कि लोकतांत्रिक दृष्टि से वांछित स्वतंत्रताओं में सबसे महत्वपूर्ण स्वतंत्रता दिमागी स्वतंत्रता है, क्योंकि इसके बिना लोग स्वतंत्र रूप से विकास के लिए सही अर्थों में आजाद नहीं हो पाते।

सीगल : क्या आप यह कहना चाहेंगे कि यह विचार वर्तमान में खासतौर से प्रासंगिक हैं, बहु सांस्कृतिकता पर वर्तमान शिक्षा में दिए जा रहे जोर के संदर्भ में?

शेफलर : इस बात को स्वीकार करना महत्वपूर्ण है कि हमारा समाज ऐसे लोगों से मिलकर बना है जिनकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि विविधतापूर्ण है। किंतु बहु सांस्कृतिवाद को निरंतरता बनी रहे इसके लिए साझा ढांचों का होना जरूरी है ताकि समाज फलता-फूलता

रहे। हमारे समाज को एकजुट रखने वाले ढांचों में विधिक और राजनीतिक ढांचे प्राथमिक उदाहरण हैं। लेकिन डीवी मुक्त संवाद कि लिए जिन माध्यमों पर जोर देते हैं वे एक लोकतांत्रिक समाज के लिए खासतौर से महत्वपूर्ण हैं। मैं यह जोड़ना चाहूंगा कि संवाद के लिए न सिर्फ स्वतंत्रता जरूरी है बल्कि बहुत हद तक समानताओं की भी जरूरत होती है, जैसे साझा भाषा, संकेत और साहित्यिक विरासत जो हमें समान स्मृतियों और लगावों से जोड़ते हैं। साहित्यिक विरासत जो पूर्व में हमारी मदद करती रही है और हमें जोड़ने वाली ताकत प्रदान करती रही है, वह वर्तमान में क्षीण होती जा रही है। यह साझापन जो हमें अतीत में प्राप्त था जो हमें साझा मिथ, कविता और धार्मिक साहित्य के रूप में प्राप्त था, उसका प्रभाव बहुत हद तक मिट रहा है। अल्फ्रेड नॉर्थ ह्वाइटहेड उत्तर में स्थिति एक अंग्रेज काउंटी में अपने बचपन के दिनों को याद करते हैं जहां पत्थर की दीवारें थीं, भेड़ें थीं और घंटियों की आवाजें सुनाई देती थीं। वे बताते हैं कि उनकी आरंभिक शिक्षा बहुत हद तक यूनानी और रोमन इतिहास और बाइबिल के माध्यम से हुई। वे कहते हैं कि इसके बाद मानव इतिहास में उन्हें ऐसा कोई अवसर नजर नहीं आया जिसे वे अपनी उस शिक्षा से जोड़ न पाते हों जो उन्होंने बाइबिल या यूनानी और रोमन इतिहास से सीखा। इस तरह की साझेदारी को पोषित करने का बहुत बड़ा फायदा विविधताओं के व्यक्तियों और घटनाओं के साझा प्रावधानों के रूप में मिलता है। आजकल यह लगभग नहीं होता, दुर्भाग्यवश हमारे समाज में इसके समकक्ष यदि कोई साझेदारी देखने को मिलती है तो वह टीवी द्वारा किए जाने वाले लोकप्रिय किस्म के मनोरंजन के रूप में देखने को मिलती है जो हमारे युवाओं के बीच खोटे सिक्के को असली बना कर चला रहा है। यह एक सांस्कृतिक और शैक्षिक समस्या है जिस पर ध्यान देने की जरूरत है।

सीगल : क्या आप इस समस्या के समाधान के लिए कोई सुझाव देना चाहेंगे? कैसे उस साझेदारी को प्राप्त किया जाए या उसके बिना जीवन को देखा जाए?

शेफलर : काश मैं ऐसा कर पाता। जन संचार के माध्यम स्वयं को सिर्फ मनोरंजन प्रदान करने वाले के रूप में ही नहीं बल्कि शिक्षा के माध्यम के रूप में भी देखें तो वह सही दिशा में एक कदम हो सकता है। जनता की यहां केंद्रीय भूमिका है जो यहां वह मांग पैदा कर सकती है जो बदलाव के लिए आर्थिक प्रेरणा के रूप में रूपांतरित हो सकती है।

सीगल : शिक्षा के दर्शन की वर्तमान स्थिति को आप कैसे समझाएंगे? इसके इतिहास को आप कैसे देखते हैं? संभवतः आप पीटर्स और हर्स्ट के साथ अपने संबंधों और आपके करियर के शुरुआती दौर में अंग्रेजी भाषी समाज में शिक्षा के दर्शन के बारे में भी कुछ बता सकें? लेकिन मैं आपसे वर्तमान के बारे में भी कुछ जानना चाहूंगा : कि इस सारे खेल की वर्तमान स्थिति क्या है? और फिर आप इसके भविष्य के बारे में क्या सोचते हैं? (यह आपके लिए एक छोटा सा सवाल है!)

शेफलर : पूर्व में मैं यह जानता था कि मुझे क्या करना है और मैं जानता था कि क्या किए जाने की जरूरत है। इसका ताल्लुक इस विषय को सामान्य दर्शन के साथ कैसे संबद्ध करने से था, जैसे कि इतिहास के दर्शन, उसकी विधियों और समस्याओं के साथ उसे संबद्ध करने से था। मैं सोचता था कि बौद्धिकता को आकार देने और हमारे स्कूल का नैतिक वातावरण बनाने के लिए जिम्मेदार शिक्षकों को शिक्षित करने में दर्शन की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसे करने की कोशिश में एक समस्या यह थी कि जैसा कई अन्य देशों में है उस तरह अमरीकी माध्यमिक शिक्षा में दर्शन के लिए कोई स्थान नहीं था। दूसरे देशों में इसका स्थान है : फ्रांस, जर्मनी, ब्रिटेन में लोग इस विषय के बारे में जानते हैं; वे इसका महत्त्व स्वीकार करते हैं; वे इसे समझते हैं; और सार्वजनिक जीवन में अनेक व्यक्ति ऐसे हैं जो एक ऐसी शैक्षिक व्यवस्था से हो कर गुजरे हैं जिसमें इस विषय को समझना और इसमें क्या निहित है यह सिखाया गया है। अमरीका में सार्वजनिक जीवन में ज्यादातर व्यक्तियों को यह अनुभव प्राप्त नहीं है। वे समाज में कानून, राजनीति और व्यवसाय जैसे विषयों के मार्फत आते हैं और दर्शन काफी दूर छिटका हुआ नजर आता है। इसलिए स्कूलों को अपने संघर्ष में कोई सहयोगी भी नहीं मिलता है। यह एक गंभीर समस्या है। रिचर्ड पीटर्स, पॉल हर्स्ट, मैंने और अन्य लोगों ने जो करने का प्रयास किया वह यह कि हमने शिक्षकों की शिक्षा में इस विषय को शामिल किए जाने को प्रोत्साहित किया। हमारे पास एक मकसद, एक कार्यक्रम और आंदोलन की भावना थी। इंग्लैंड में पीटर्स ने खासतौर से शिक्षकों के कॉलेजों के साथ जबरदस्त काम किया। हमारे देश में, शिक्षकों के कॉलेज की समुचित व्यवस्था के अभाव में और लोगों में दर्शन के प्रति उस तरह की समझ के अभाव में, जैसी ब्रिटेन में है, हम उसी तरह काम नहीं कर पाए। ब्रिटेन में दर्शन की पुस्तकों की समीक्षा आम प्रकाशनों में होती है, नियमित पत्र-पत्रिकाओं में होती है और रेडियो पर भी होती है। हमारे यहां उसके समकक्ष स्थितियां नहीं हैं। व्यावसायिक पत्र-पत्रिकाओं में दर्शन के प्रकाशनों की समीक्षा करते हैं, चुनिंदा आम पत्र-पत्रिकाएं भी करती हैं, संभवतः न्यूयार्क रिव्यू ऑफ बुक्स बेहतरीन है। तो संघर्ष तो एक ही था, लेकिन उसके लिए संसाधन भिन्न किस्म के थे। अंततः मेरे ख्याल से उस अवधि में हम कुछ काम कर पाए। मैं अब भी सोचता हूं कि यह एक करने योग्य काम

था। अब यदि में वर्तमान की बात करूं, नई बातों को ज्यादा महत्त्व दिए जाने के कारण, जैसे बहु संस्कृतिवाद और फेमिनिज्म, व्यवस्था की बजाय राजनीतिक मसलों की ओर मुड़ जाने के साथ ही साथ रहस्यात्मक और स्व-परिभाषित किस्म के आध्यात्म की ओर बढ़ते रुझान के कारण स्थितियां बदल गई हैं।

सीगल : आप वर्तमान के संदर्भ में आम लोगों के बारे में बात कर रहे हैं या शिक्षा के दार्शनिकों के बारे में?

शेफलर : मैं सामान्य हालात के बारे में बात कर रहा हूं, लेकिन बदलावों ने दर्शन को भी प्रभावित किया है। बहुत सारी दार्शनिक ऊर्जा राजनीतिक और सांस्कृतिक मसलों पर चर्चा में खप रही है। इस तरह के बदलाव कैसे शिक्षा व्यवस्था को प्रभावित कर रहे हैं, यह भी अनेक दार्शनिक अध्ययनों का विषय बनता जा रहा है। मैं शिक्षा के दर्शन के बारे में वर्तमान स्थिति पर बहुत आत्मविश्वास के साथ कुछ नहीं कह सकता, लेकिन मैं एज्युकेशनल थियरी और पीईएस ईयरबुक पढ़ता हूं और उसका ताजा अंक पढ़ कर मुझे काफी अच्छा लगा, जो मेरी राय में काफी अच्छा था।

सीगल : आप वर्ष 2003 की ईयरबुक की बात कर रहे हैं?

शेफलर : हां। मेरी राय में उसका स्तर अच्छा है और जैसी कि मैं पहले चर्चा कर रहा था इसमें एक किस्म की निरंतरता है।

सीगल : शिक्षा के दर्शन के भविष्य के बारे में बात करते हैं : एक पल के लिए यह मान लेते हैं कि हाल के प्रकाशित कार्यों के स्तर में धीरे-धीरे सुधार आ रहा है। आपको क्या लगता है इसे किस दिशा में जाना चाहिए? इस नई गुणवत्ता को कहां ले जाना अच्छा रहेगा? आने वाले दशकों में शिक्षा के दार्शनिकों को क्या करना चाहिए? (आप भविष्य में कहां तक देखना चाहते हैं?)

शेफलर : मैं उम्मीद करता हूं कि शिक्षा के दार्शनिक अपने काम को व्यापक फलक पर रख कर देखेंगे और चिंतन, जानने, महसूस करने, चुनने, कार्य करने और महत्व देने से संबंधित बहुत मौलिक अवधारणात्मक और सैद्धांतिक सवालों का जवाब तालाशने की कोशिश करेंगे। इन प्रयासों में मैं उम्मीद करता हूं कि वे अपने विचारों को प्रश्नों के रूप में इस मुद्दे की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और साथ ही अन्य देशों में समानांतर परिस्थितियों से जोड़ने का प्रयास करेंगे। दर्शन एक विश्व्यापी विषय है और इस तथ्य को स्वीकारने से इस विषय के व्यापक स्थानीय सरोकारों से बाहर विस्तार करने और व्यापक दृष्टि को विकसित करने में मदद मिलेगी।

सीगल : आपने अभी जो कहा उससे मुझे आपके द्वारा पूर्व में अमरीका में विकेंद्रीकरण की समस्या के संदर्भ में कही गई बात ध्यान आती है। यदि हम वास्तव में दर्शन को सरकारी हाई स्कूलों में विषय के तौर पर लागू कराना चाहेंगे तो यह काम असंभव प्रतीत होगा क्योंकि हमें प्रत्येक जिले को इसके लिए अलग से समझाना और राजी करना पड़ेगा। विकेंद्रीकरण प्रासंगिक सुधार या व्यवस्थित सुधार को लगभग असंभव बना देता है; कम से कम बहुत मुश्किल तो बना ही दिया है। हमें इसके लिए दर्शन के जिहादियों की एक पूरी फौज की जरूरत पड़ेगी।

शेफलर : इस मामले में मैं आपसे कम निराशावादी हूं क्योंकि कुछ खास दृष्टि वाले स्कूल और कार्यक्रम आपके साथ आ भी सकते हैं। समस्या अच्छे कार्यक्रमों की दृष्टि का विस्तार करने की है।

सीगल : यह अलग प्रश्न पूछते हुए मैं कुछ असुविधा महूसस कर रहा हूं। मैं कह डालता हूं फिर आप तय कर लीजिए आप जो करना चाहें : शिक्षा के दार्शनिक के रूप में आप अपने योगदान को कैसे देखते हैं? इस क्षेत्र में आप स्वयं को किस रूप में याद किया जाना पसंद करेंगे?

शेफलर : दर्शन में हर युग को यह देखना होता है कि वह कहां है और वह अतीत पर निर्भर नहीं रह सकता। इसके पास पहले से जो है इसे उसका इस्तेमाल करना होता है, लेकिन उससे आगे भी बढ़ना होता है। हर पीढ़ी वर्तमान में उपयोगी होकर सफलता पाती है और भविष्य के सरोकारों से खुद को संबद्ध करती है। यह इसी तरह होता है। सबसे अच्छा तरीका यह है कि आप अपना बेहतरीन योगदान दें जो भविष्य को आगे ले जाने में मदद करे। मैं अपनी विरासत के बारे में ज्यादा नहीं सोचता। लेकिन मुझे उम्मीद है कि मैंने कुछ उपयोगी काम किया है और वह भावी प्रयासों में मददगार हो सकता है। मुझे खुशी होगी यदि ऐसा हो पाए।

सीगल : क्या आपके काम के कुछ ऐसे खास हिस्से हैं जो आपको लगता है कि ज्यादा उपयोगी हो सकते हैं?

शेफलर : मैं वाकई नहीं जानता ।

सीगल : यदि मैं अपनी राय बताऊं तो मैं आपके काम से अभिभूत हूं और मुझे यह लगता है कि भावी प्रयासों में आपका अधिकांश काम बहुत उपयोगी साबित होगा क्योंकि अब तक भी उसका अत्यधिक प्रभाव है और वह बहुत उपयोगी है। व्यक्तिगत रूप से मुझे आपके *रीजन एंड टीचिंग* के कुछ निबंध अत्यंत महत्त्वपूर्ण लगते हैं। *कंडीशंस ऑफ नॉलेज* अपने प्रकाशन के चालीस वर्षों के बाद भी ज्ञानमीमांसाकारों के द्वारा सराही जा रही है। विज्ञान के दर्शन पर आपकी किताबें *साइंस एंड सब्जेक्टिविटी* और *द एनाटॉमी ऑफ इनक्वायरी* को अब भी उद्धृत किया जाता है और उनकी चर्चा होती है, यही स्थिति बियोंड द लैटर, इन प्रेज ऑफ द कॉग्निटिव इमोशंस और आपकी अन्य प्रकाशित पुस्तकों की है। लेकिन शायद

हमें समय को अपना निर्णय सुनाने का इंतजार करना होगा।

मैं चाहूंगा कि यदि हम फिर से विश्लेषण और विश्लेषण की परंपरा संबंधी हमारी चर्चा की ओर लौट पाएं। अक्सर यह कहा जाता है कि विश्लेषण की परंपरा प्रतिमानों से कोई सरोकार नहीं रखती और तटस्थ विवरणात्मक विश्लेषण और मानक मूल्यांकन या अनुशंसा के बीच एक स्पष्ट विभाजन के एक तरफ रह कर काम करती है। ऐसा कहा जाता रहा है कि आप स्वयं भी उसी किस्म के विश्लेषणवादी हैं, जो अपने विश्लेषणपरक कार्यों में मानकों से दूर रहते हैं। मैं नहीं जानता आप इसका समर्थन करेंगे या इसे नकारेंगे।

शेफलर : विश्लेषण और मानक के बीच कोई स्पष्ट विभाजन है, मैं इस विचार को ही खारिज करता हूं। यदि आप विचारों के विवरणात्मक आशयों का विश्लेषण कर रहे हैं तो जो कार्य, इरादों और मूल्य आदि से संबंध रखता है तो आपके द्वारा दिए गए सामान्य विवरण भी मानकीय प्रभाव लिए होंगे।

प्रत्येक विवरणात्मक विचार में लोगों के कार्यों पर पर्याप्त प्रभाव डालने की क्षमता होती है, उसके अपने मानक होते हैं और वह उन मानकों को और प्रभावित कर सकता है। एक विषैले पदार्थ का रसायनिक विश्लेषण, किसी मानक की बात किए बिना मात्र यह बताने में कि विष कहां है, आपके कार्य को प्रभावित करता है, जो विष के प्रति आपकी विमुखता के कारण होता है।

अब शिक्षण के विचार को ही लें। मैं इस विचार का विवरणात्मक विश्लेषण करना चाहता था, कारण के आदन-प्रदान के संदर्भ में। कुछ लोगों ने कहा 'लेकिन आप भी समर्थन कर रहे हैं' क्योंकि मैं युवाओं के साथ संवाद के लिए अन्य सभी तरीकों की बजाय तर्क का अधिक महत्व देकर एक तरह का मानक स्थापित कर रहा हूं। वास्तव में ऐसा नहीं है। वास्तव में ऐसे अवसर आते हैं जब तर्क, और इसलिए मेरे तईं शिक्षण भी, पूर्णतः अनुपयुक्त जान पड़ता है। एक छोटा बच्चा जिसे आप सड़क के किनारे फुटपाथ पर रहने का निर्देश दें और कहें कि वह राजमार्ग पर न जाए आपसे तर्कपूर्वक पूछ सकता है 'क्यों', इस पर आप जवाब देंगे 'क्योंकि मैं नहीं चाहता कि वहां से गुजरती गाड़ियां तुम्हें टक्कर मार दें।' बच्चा कहेगा 'मुझे ऐसा नहीं लगता। मैंने आपका तर्क सुना और मैं उसे मानने से इनकार करता हूं।' अब आप उस बच्चे को शिक्षा देने की बजाय उसके साथ कोई और तरीका अपनाएंगे। यदि आप उसे जीवित रखना चाहते हैं तो उसे ट्रैफिक से दूर ले जा कर समझाएंगे, जरूरत पड़ने पर सजा भी देंगे।

मैं विवरणात्मक और मानकीयता के बीच संशय की स्थिति नहीं पैदा करना चाहता, लेकिन फिर भी दोनों के बीच वास्तव में कुछ संबंध भी है।

सीगल : क्या आप विश्लेषण/मानक के इस कथित विभाजन को हिलेरी पुतनाम के तथ्य/मूल्य विभाजन के चुनौती देने के प्रयासों से जोड़ कर देखेंगे?

शेफलर : मैंने इस मुद्दे पर पुतनाम को नहीं पढ़ा है लेकिन मैंने इस बारे में डीवी को और उनके विचारों पर मॉर्टन ह्वाइट, सिडनी हुक, जॉन लैड और अन्य अनेक लोगों द्वारा की गई विस्तृत आलोचनात्मक बहसों को पढ़ा है। डीवी को हालांकि व्याख्या की जरूरत है और मैं यहां अपनी व्याख्या बताना चाहूंगा : कई लेखों में वे अपनी बात को जिस तरह से कहते हैं वह मुझे काफी अतर्कसंगत लगती है। इन लेखों में वे कहते हैं कि मूल्य का निर्णय स्थिति और परिणामों की व्यावहारिक व्याख्या से निकलता है। इस तरह सिद्धांत रूप में यह वैज्ञानिक मसला है, एक बार किसी कार्य की स्थिति और परिणाम तय हो जाएं तो यह तय किया जा सकता है कि यह गलत है या सही (या दोनों ही नहीं)। यह विचार जिस रूप में व्यक्त किया गया है उस रूप में तर्कसंगत नहीं है, क्योंकि स्थितियों के विवरण और कार्य के परिणाम से निष्कर्ष निकलता है कि कार्य सही है (या गलत या दोनों नहीं) यह कहना तर्कसंगत नहीं है। यदि आप यह जानते हैं कि एक खास भोजन आपके शरीर में जहर फैला देगा, यह निश्चित रूप से तय नहीं करता कि आपको इसे नहीं खाना चाहिए। ऐसा मानने के लिए आपको इस धारणा को मानना होगा कि आपको ऐसी कोई भी चीज नहीं खानी चाहिए जो शरीर में जहर फैला दे या उस तरह का असर डाले। इसका निहितार्थ यह हुआ कि निश्चय ही तथ्य और मूल्य के बीच एक स्पष्ट विभाजन है बावजूद इसके दोनों कभी-कभार आपस में टकराते हैं।

जैसा कि मेरा अनुमान है, संभवतः डीवी का जवाब होगा कि जब तक आप यह पता लगाने की कोशिश करेंगे कि कोई कार्य सही है या गलत, तब तक आप पहले ही उस पर अनेक मूल्यों को आरोपित कर चुके होंगे। यह ऐसा ही नहीं है जैसा वोल्फगेंग कोहलर की एक किताब *द प्लेस ऑफ वेल्यू इन ए वर्ल्ड ऑफ फेक्ट्स* का नाम कहता है की मूल्य तटस्थ तथ्यों के तात्कालिक उद्घाटन से स्फुटित होते हैं। वह व्यक्तिगत संसार, जिसमें हम में से प्रत्येक व्यक्ति रहता है, वह महज तथ्यों की दुनिया नहीं है। वह न सिर्फ हमारे तथ्यात्मक विश्वासों से बना है बल्कि हमारे हितों, संवेगों और घृणाओं से भी बना है और वे सभी हमें हमारे तथ्यात्मक हालात की समझ के साथ खास दिशा में ले जाना चाहते हैं। यह गुण हमारे आरंभिक मूल्यों का निर्माण करते हैं, हमारे चयन की समस्याओं को परिभाषित करने में मदद करते हैं, और हमारी अपनी पसंद-नापसंद के साथ परिवर्तनीय होते हैं।

जब यह स्पष्ट हो जाते हैं तब पूर्व में बताई गई तर्कसंगत दिशा में ले जाने के लिए उन्हें अतिरिक्त तर्क की आवश्यकता होती है। यह कोई जादूई खरगोश नहीं हैं जिन्हें डॉ. डीवी ने अपने सिद्धांत को बचाने के लिए अपने हैट से निकाला हो, बल्कि हमारे व्यक्तिगत जीवन में सामने आने वाली समस्याओं के वास्तविक उपादान हैं।

सीगल : तो एक तरफ तो आप ह्यूम की उस मूलभूत आलोचना से सहमत हैं कि 'आप जो ''हैं'' उसे से जो ''होना चाहिए'' में नहीं बदल सकते।' लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि विवरण और मूल्यांकन पूर्णतः एक-दूसरे से अलग हैं।

शेफलर : हां, जैसा कि आप कहते हैं 'आप नहीं कर सकते.....', यदि आप अपने बारे में यह सोचते हों कि आप सिर्फ तथ्यों में विश्वास करते हैं। लेकिन अंततः जो है वह वास्तव में वह 'आप' में ही है। डीवी के लिए यह 'आप' पूर्वनिर्धारित तथ्यात्मक और मूल्यों के विश्वासों का समूह हैं जो आपकी व्यक्तिगत समस्याओं के हालात को परिभाषित करता है। तथ्य/मूल्य का यह विभाजन स्थिति में पहले से निहित होता है, आपका जो 'होना चाहिए' जो 'है' दोनों ही। यह जो 'होना चाहिए' आपके व्यक्ति में अंतरनिहित तर्क हैं जिन्हें आप अपने नए अर्जित किए गए 'है' से अर्जित करते हैं, कर सकते हैं, उनके माध्यम से आप अपनी समस्याओं के समाधान के लिए अपने भावी 'होना चाहिए' की दिशा में बढ़ते हैं।

सीगल : मेरे खयाल से इसे समझाने का यह काफी बेहतर तरीका है। यदि आप इसे इस तरह रखें जैसे मैं रखता हूं कि 'आप जो 'होना चाहिए' उससे जो 'है' को अर्जित नहीं कर सकते - क्योंकि 'आप' तो उसमें पहले से ही शामिल हैं। यदि आप इसे थोड़ा और तटस्थ हो कर कहेंगे तो 'है' कहने में 'होना चाहिए' कहना निहित नहीं है - यह ठीक है, लेकिन यह पूरी तरह समस्या की स्थिति को नहीं कहता।

शेफलर : यह सही है। डीवी अपने विचारों को अलग तरह से अभिव्यक्त करते हैं। जहां तक मेरी जानकारी है उन्होंने इसे कभी इस तरह व्यवस्थित नहीं किया। लेकिन जब आप इस पूरे को समझने की कोशिश करते हैं, तो मुझे लगता है कि मैं जिस तरह व्याख्या करता हूं वह उनके विचारों का प्रतिनिधित्व करती है। डीवी के अनुयायी सिडनी हुक, जिन्हें मैंने स्नातक के दौरान पढ़ा वे दर्शन को 'मूल्य के धरातल से अस्तित्व का सर्वेक्षण' के रूप में परिभाषित करते हैं। उस वक्त मैं इसे लेकर बहुत संशय में था, लेकिन इसमें कुछ बात है : मूल्य का धरातल वह है जहां हम खड़े हैं। और अस्तित्व का विवरणात्मक सर्वेक्षण अकेला खड़ा नहीं रहता। यह हमारी समस्याओं को पहचानने वाले मूल्यों के साथ संबद्ध है।

सीगल : क्या आप शिक्षा के दर्शन में आपके अपने काम और प्रगतिशीलता के बीच संबंध के बारे में कुछ बताएंगे? आप किस हद तक प्रगतिशीलतावादी हैं, यदि हैं तो?

शेफलर : क्या आपका आशय डीवी के शिक्षा के दर्शन में प्रगतिशीलता से है ?

सीगल : मेरा आशय डीवी की प्रगतिशीलता से है।

शेफलर : मैं प्रगतिशीलता से जुड़े कई विचारों का महत्त्व स्वीकार करता हूं - उदाहरण के लिए, करके सीखना, स्कूल को समाज के साथ जोड़ना, शिक्षण की परियोजना प्रणाली, स्कूल के सामाजिक वातावरण का महत्त्व, सीखने को व्यक्तिगत मानना, लोकतंत्र को शिक्षा का मानक मानना, रट के सीखने को कम करना, रचनात्मकता और समस्या समाधान पर जोर और ऐसी अनेक बातें। समय बीतने के साथ ऐसे अनेक विचारों को अतिरंजित कर दिया गया है या फिर उन्हें विकृत कर दिया गया है, जिनकी खुद डीवी ने भी आलोचना की, जैसे 1938 में अपने कुछ आरंभिक अनुयायियों के काम की आलोचना उन्होंने की। वे एक संतुलन चाहते थे - एक ऐसा गुण जिसे अर्जित करना बहुत कठिन है।

सीगल : एक अंतिम प्रश्न : आप इन दिनों क्या कर रहे हैं, दर्शन के क्षेत्र में? किन दार्शनिक समस्याओं पर चिंतन कर रहे हैं?

शेफलर : पिछले साल ज्यादातर समय मैं अपनी पुस्तक *गैलरी ऑफ स्कॉलर* के प्रकाशन के सिलसिले में व्यस्त रहा और मैं ज्यादातर समय लोगों के शिक्षण की तौर-तरीकों को देखता रहा और अपने विषयों के अध्यापन के साथ व्यक्तित्वों के संवाद के बारे में सोचता रहा। अब मैंने अन्य विषयों पर काम करना शुरू कर दिया है जिनमें साहित्य का सिद्धांत, जैसे कि ज्ञानमीमांसा के कुछ मुद्दे शामिल हैं।

सीगल : इस साक्षात्कार के लिए सहमति देने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। आपसे बात करके बहुत अच्छा लगा।

शेफलर : धन्यवाद। ◆